

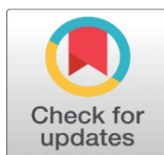
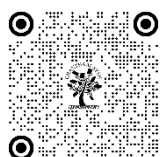
AESTHETIC STUDY OF RAMAYANA PAINTINGS UNDER MEWAR PAINTING STYLE

मेवाड चित्र शैली के अंतर्गत रामायण के चित्रों का सौन्दर्यात्मक अध्ययन

Rajni Sharma¹ , Premrata²

¹ Department of Visual and Performing Arts, Mangalayatan University, Beswan, Aligarh

² Department of Visual and Performing Arts, Mangalayatan University, Beswan, Aligarh



ABSTRACT

English: The Rajasthan miniature style is considered to have originated and developed around the 15th century. During this period, Rajasthani painters have completed their art with the sacred portrayal of Lord Krishna and Lord Rama. This was the same time when the development of Brij Bhasha, which introduces everyone to the character of Lord Krishna and Lord Rama, and the emergence of the Pushti Marg branch of the Vallabh sect took place. Both influenced the painting of their time. The Bhakti movement of Ramanand Chaitanya, Vallabhacharya, Sur, Tulsi, Meera etc. got strength during this period. The style flourishing under the protection of Indian mythology and religion was named the Apabhramsha style. The Rajput painting style flourished from the Apabhramsha style. Because when the Apabhramsha style declined, the Rajput kings kept the painting style confined to the royal throne by giving patronage to various painters on their throne. Due to which this style is called Rajput era or Rajasthani style. Its depiction period is considered to be from 1400 AD to 1800 AD. Many different sub-styles developed under the Rajput era style which include Mewar, Malwa, Bundelkhand, Jodhpur, Bundi, Kota, Kishangarh, Bikaner, Jaipur etc. Kumar Swami has taken some beliefs of this style regarding spiritual and aesthetic aspects. And this style has been established with ancient folk tales, classical art etc. Dr. Visalgrey has considered the emergence of this style between 1600 AD and 1620 AD. He has established a difference between Mughal style and Apabhramsha style on the basis of clothing ornaments and costumes. This style is different from Mughal style in terms of color scheme, composition method and medium. Most of the paintings in Rajput era painting style are also book paintings.

Hindi: 15वीं शताब्दी के लगभग राजस्थान लघुचित्र शैली का उदभव व विकास माना जाता है। इस काल में राजस्थानी चित्रकारों ने अपनी कला को श्रीकृष्ण व राम के पवित्र चरित्रांकन से सम्पूर्ण किया है। यह वही समय था जब श्रीकृष्ण व राम के चरित्र से सभी जनो को साक्षात्कार कराने वाली ब्रजभाषा की उन्नति और बल्लभ सम्प्रदाय की पुष्टि मार्गीय शाखा का अभ्युदय हुआ। दोनों ने अपने समय की चित्रकला को प्रभावित किया। रामानन्द चैतन्य बल्लभाचार्य सूर तुलसी मीरा आदि के भक्ति आंदोलन को इस काल में बल मिला। भारतीय पुराण शास्त्र व धर्म के संरक्षण में पनप रही शैली को अपभ्रंश शैली का नाम दिया गया। अपभ्रंश शैली से ही राजपूत कालीन चित्र शैली का उत्थान हुआ। क्योंकि अपभ्रंश शैली के हास होने पर राजपूत राजाओं ने अपने राज सिंहासन में विभिन्न चित्रकारों को संरक्षण देकर चित्र शैली को राजसिंहासन तक ही सीमित रखा। जिससे इस शैली को राजपूत कालीन या राजस्थानी शैली पुकारा जाता है। इसका चित्रण समय 1400 ई० से 1800 ई० तक माना गया है। राजपूत कालीन शैली के अंतर्गत कई विभिन्न उपशैलियां पनपी जिसमें मेवाड, मालवा, बुन्देलखण्ड, जोधपुर, बूंदी, कोटा, किशनगढ़, बीकानेर, जयपुर आदि है। कुमार स्वामी ने अध्यात्मिक और सौन्दर्यात्मक पक्ष को लेकर इस शैली की कुछ मान्यताओं को लेकर किया है। तथा इस शैली को प्राचीन लोक कथाओं शास्त्रीय कला आदि से स्थापित किया है। डा वीसल ग्रे सन 1600 ई से सन 1620 ई के मध्य इस शैली का उदय माना है। उन्होंने वस्त्रालंकार वेश-भूषा के आधार पर मुगल शैली व अपभ्रंश शैली इन दोनों शैलियों पर अन्तर स्थापित किया है रंग योजना रचना विधि और माध्यम की दृष्टि से इस शैली में मुगल शैली से अलग है। राजपूत कालीन चित्रशैली में भी अधिकांश चित्र ग्रन्थ चित्र हैं।

Keywords: Rajasthan, Miniature Painting, Ramayana, Stylistic Relationship, Analysis, राजस्थान, लघु चित्रकला, रामायण, शैलीगत सम्बन्ध, विवेचना

Corresponding Author

Rajni Sharma,
sharmarajni20feb@gmail.com

DOI

10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.3338

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](#).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



1. प्रस्तावना

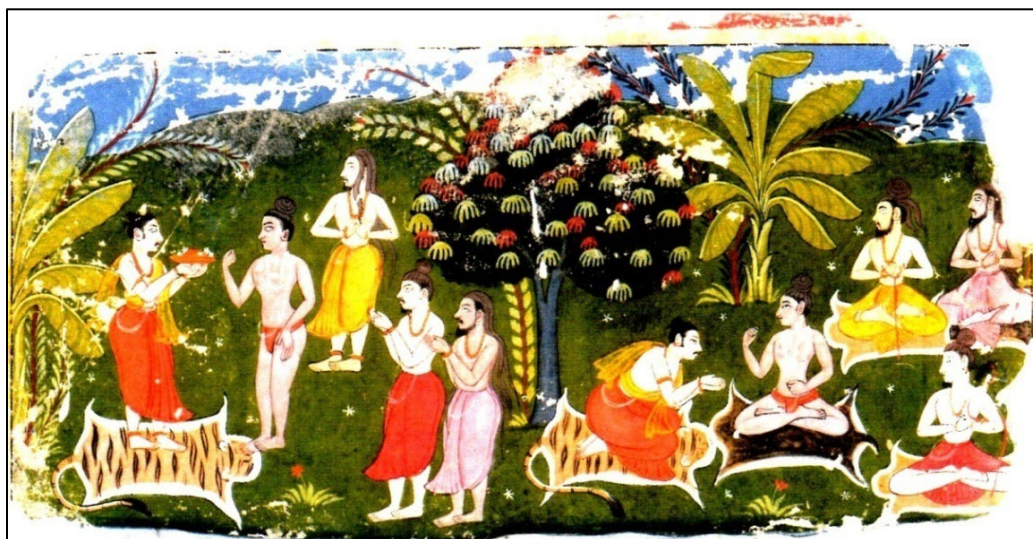
मन की अदृश्य भावनाओं को चित्र और रेखाओं द्वारा अभिकथन करना चित्रकला कहलाती है। चित्रण करने की कला में संस्कृति विकास नजर आता है। प्रगतिहासिक काल में मध्यप्रदेश की भीमबेटका गुफाओं की चित्रकारी सबसे प्राचीन मानी जाती है। सिन्धु घाटी सभ्यता में दो मृदुभाण्डों सिक्को दीवाली आदि पर बने हुए कई चित्र प्राप्त होते हैं। मौर्य और गुप्तकाल में इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। वात्सायन के कामसूत्र में चित्रकला की गणना

चैसठ कलाओं में की गई है। गुप्त चित्रकला के सवोत्कृष्ट उदाहरण अजन्ता से प्राप्त हुए हैं। उत्कृष्ट रैखिक निरूपण और रंगों के गतिशील विस्तार ने इसके भित्ति चित्रों को विशेष बना दिया है। मध्यकाल में मुगल चित्रकला का प्रभाव राजस्थानी चित्रकला में भी देखने को मिलता है। अजन्ता परम्परा के गुजराती चित्रकार सर्वप्रथम मेवाड़ तथा मारवाड़ पहुँचे। जिससे चित्रकारी में मौलिक विधि में एक नविनता का संचार हुआ। राजस्थान की समन्वित शैली के तत्वाधान में अनेक जैन ग्रन्थ चित्रित किये गये। जिन्हें जैन साधुओं ने चित्रित किया है। अब इसे जैन शैली कहा जाने लगा तथा कुछ अन्य ग्रन्थ बालगोपाल स्तुति, दुर्गा सप्तशती, गीत-गोविन्द आदि भी इसी शैली में चित्रित किये गये हैं। यहाँ की चित्रकारी में रेखाओं का संयोजन, रंगों का सामंजस्य और अनुपात देखते ही बनता है। राजस्थानी चित्रकला शैली विभिन्न राजपूत शासकों के संरक्षण में फली-फूली थी। अनेक विशिष्टताएँ अर्जित कर लेने के कारण यहाँ की चित्रकला शैलियों को मुख्यतः 4 भागों में बांटा गया है। 1.1 मेवाड़, 1.2 जयपुर (अलवर), 1.3 बूंदी (कोटा, उनीयारा), 1.4 बीकानेर (जोधपुर)।

मेवाड़

वैष्णव पुनर्जागरण के बाद, चित्रकला का उत्पादन बढ़ गया था। मेवाड़ के बाद के कवि भानुदत्त की रसमंजरी शृंखला और जैन पैलेस रागमाला पेंटिंग्स में बहुरंगी और बहुआकार के पत्तों वाले पेड़ों की समृद्ध रंगीन प्रकृति है जो कि हमें पहले की शुरूआत की कला से नजर आई। साहिबदीन के समय तक मेवाड़ ने मुगल दरबार के साथ गहरे और मित्रतापूर्ण संबंध विकसित कर लिए थे, लेकिन इसके बावजूद साहिबदीन के चित्रों में भी प्रतिकात्मक धारणा समझाने का चित्रण जो (इशारा) इंगित करता है। पेड़ों का कलात्मक ढंग, पारम्परिक पृष्ठभूमि और इसी तरह एक मजबूत चैर पंचासिका चरित्र उसका प्रमाण हैं।

प्रेम वैष्णववाद का आधार है, राजस्थानी चित्रकला यहाँ तक कि शिकार या खुशी के दृश्य को दर्शाते वक्त भी इसमें एक अद्वितीय गीतात्मक गुणवत्ता, लय और रोमांटिकता मिलती है, जो शायद ही किसी अन्य कला की विशेषता हो। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं० 1



चित्र सं 1, भागवत पुराण के एक चित्र की प्रति 1635-40 ई० (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

मेवाड़ की यह पेंटिंग भगवान विष्णु के परशुरामवतार के बारे में है। परशुराम को भगवान विष्णु के छठे अवतार के रूप में पूजा जाता है। जब परशुराम को क्षत्रिय राजा द्वारा कामधेनु की चोरी के अनुचित कृत्य के बारे में पता चलता है। तो वह उसे मारने और दिव्य गाय को वापस लाने के लिये आगे बढ़ते हैं। परशुराम को शक्तिशाली राजा कार्तवीर्य को मारने के कृत्य में दिखाया गया है। कार्तवीर्य को कई भुजाओं के साथ दर्शाया गया है और वे बड़ी संख्या में हथियार पकड़े हुए हैं। योद्धा की पोशाक पहने हुए शक्तिशाली राजा परशुराम की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली दिखते हैं जो लाल धोती पहने हुए हैं। और भगवान शिव द्वारा उन्हें दिया गया एक कुल्हाड़ी पकड़े हुए हैं। एक सामान्य युद्ध में दो भुजाओं वाला व्यक्ति शक्तिशाली 1000 भुजाओं वाले राजा का मुकाबला करने में सक्षम नहीं होता लेकिन यहाँ मुकाबला बराबरी का नहीं है क्योंकि परशुराम भगवान विष्णु के अवतार हैं। हालांकि उन्हें केवल दो हाथों से दर्शाया गया है लेकिन उनके पास क्षत्रिय राजा की तुलना में अधिक शारिरिक शक्ति है। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं० 2



चित्र सं0 2, परशुरामावतार भगवान विष्णु के छोटे अवतार मेवाड़ लगभग 1730-40ई0 (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

महाराणा जगतसिंह प्रथम ने 24 वर्षों तक राज सिंहासन संभाला। वे निर्बाध शांति में बीते और मेवाड़ क्षेत्र उनके द्वारा किये गये शानदार कार्यों के लिए उनका ऋणी है, जो उनके नाम पर हैं। जगतसिंह प्रथम के काल में मेवाड़ चित्रकला शैली में अपनी सर्वोच्च उत्कृष्टता प्राप्त की। वैष्णव कला और स्थापत्य कला के उदार संरक्षक थे। उन्होंने कलाकारों को सुंदर नायिका भेंट, चित्र बनाने के लिये प्रोत्साहित किया। 10 विभिन्न पांडुलिपियों के विषय भी उनके काल के हैं। प्रारम्भिक मेवाड़ चित्रकला की सौन्दर्यात्मक उपलब्धि वास्तव में उल्लेखनीय है। रेखाचित्रकला, परिप्रेक्ष्य और परिष्करण की उत्कृष्टता के मामले में, इसके चमकीले रंग, आकर्षक शैलीकरण और परिदृश्य के सजावटी उपचार का अपना अलग आकर्षण है।

मुगल चित्रकला मूलतः एक दरबारी कला है, लेकिन मेवाड़ की कला उच्च आदर्शों या सौदों की आकांक्षा रखती है।

कोटा शैली:-

विष्णु सृजन और पालन करते हैं और उनकी पत्नी, देवी लक्ष्मी या श्री धन, उर्वरता और लाभ लाती है। विष्णु वह है जो व्यापक होने की प्रवृत्ति रखते हैं। इसलिए जब ब्रह्मा जल-प्रलय के साथ नष्ट हो गये और ब्रह्मांड उजाड़ और शून्य हो गया तब अकेले ही विष्णु ही व्याप्त हो गये। वे एक बच्चे के रूप में प्रकट हुए। बरगद के पत्ते पर सोते हुए, समुद्र के पानी में तैरते हुए, जल्द ही महान नाग शेष प्रकट हुए। जिन्होंने पृथ्वी को अपने फन पर धारण किया और भगवान के आराम करने के लिए अपनी कुंडलियों बिछा दी। फिर, उनकी नाभि से एक कमल का डंठल निकला और उस पर ब्रह्मा प्रकट हुए। इस पेंटिंग में, विष्णु को शेष नाग की कुंडलियों पर लेटे दिखाया गया है। और सुंदर देवी लक्ष्मी अपने भगवान के पैरों को भक्ति के साथ लहरा रही हैं। उनका वाहन पंखों वाला गरुड़, उनके बाईं ओर उपस्थित है और दो देवदूत आकाश से फूल बरसा रहे हैं। ऋषि नारद अपनी वीणा के साथ भगवान की स्तुति में भजन गाते हुए दिखाए गये हैं। एक राजा या शायद इस शानदार सृष्टि का संरक्षक, शेषसायी विष्णु और त्रिदेवी के दो अन्य देवताओं- ब्रह्मा और शिव को श्रद्धांजलि दे रहा है। चमकीले रंगों का उपयोग है। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 3



“मंगल ग्रह या मंगला महेश द्वारा”

चित्र सं0 3. शेषसायी विष्णु भगवान लक्ष्मी के साथ लगभग 1780-90ई0 हस्तनिर्मित कागज पर वनस्पति रंग (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

रामायण का परिचय:-

रामायण हिन्दुओं का सबसे प्राचीन महाकाव्य है। इसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि थे। ऐसा कहा जाता है कि करुणा की भावना से प्रभावित होकर रामायण की रचना हुई जिसके अनुसार, जब एक शिकारी ने काम मोहित क्रौंच पक्षियों की जोड़ी से एक को अपने बाण से मार दिया, तो वाल्मीकि का हृदय दया से भर गया। उसी समय उनके मुख से निकला "हे निषाद! तुमने काम से मोहित होकर इस क्रौंच पक्षी को मारा है। अतः तुम अनन्तकाल तक प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकोगे।" वाल्मीकि के इन शब्दों को सुनकर ब्रह्मा प्रकट हुए और उन्होंने उनको रामायण लिखने का आदेश दिया। इसी कारण वाल्मीकि ने रामायण लिखी।

या निषाद! प्रतिष्ठा त्वगमः शाश्वती समाः।

यत्क्रौंच मिथुनादेवकम वधीः काम मोहितम् ॥

भगवान राम की कहानी सदियों से हमारे पास रामायण के माध्यम से आई है। जो सबसे ज्ञात भारतीय महाकाव्य है। रामायण दो हजार साल पहले ऋषि वाल्मीक द्वारा लिखा गया पहला आदि काव्य या राम के जीवन की कथा है। जो अयोध्या के राजा के चार पुत्रों में सबसे बड़े थे उनका जीवन करुण रस से भरी कठिन परिक्षाओं की एक सतत श्रृंखला थी।

बीकानेर शैली:-

ऋषि वशिष्ठ के गुरुकुल में अपने भाईयो के साथ अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वे अयोध्या लौट आए। एक दिन महान ऋषि विश्वामित्र राजा दशरथ से मिलने अयोध्या आए। दशरथ ने उनका बड़े सम्मान से उनका स्वागत किया और उनके आने का उद्देश्य जानना चाहा। विश्वामित्र ने उन्हें बताया कि मारीच और सुबाहु नाम के दो बहुत शक्ति शाली राक्षस और ताडका नामक एक राक्षसी उनके आश्रम की यज्ञ भूमि पर रक्त और गंध फेक कर उसे अवित्र कर रही है। और उनके लिए अपना यज्ञ करना मुश्किल बना रही है। उन्होंने कहा की वे दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र राम को कुछ महिनो के लिए अपने साथ ले जाने आए है। क्योंकि वे इन राक्षसों का नाश करने में सक्षम है। तथा उन्हें अपना यज्ञ निर्विघ्न संपन्न कराने में सक्षम है। विश्वामित्र की मांग सुनकर दशरथ बहुत परेशान हो गये और चिंतित पिता ने ऋषि से कहा कि राम केवल 16 वर्ष के है। और वे कुख्यात राक्षसों का सामना कैसे कर सकते है। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 4



चित्र सं0 4. भगवान राम ने राक्षस का वध किया। बिकानेर शैली 18वी. शताब्दी (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

जब तक पृथ्वी पर नदियां पहाड़ रहेंगे तब तक लोगों कि बीच रामायण की कथा कही जाती रहेगी। जो कोई भी भगवान राम की कथा को पढ़ता है, जो कि पवित्र है पाप को नष्ट करने वाली है और वेदों के समान है, वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है। (1:77 वाल्मीकी, रामायण)

1.2 जयपुर शैली:-

भरत अपने पिता का अंतिम संस्कार करने के बाद अपने बड़े भाई भगवान राम को वापस अयोध्या लाने के इरादे से उनकी तलाश में अयोध्या से निकल पड़े। अपनी तीनों माताओं, ऋषि वशिष्ठ, भाई शत्रुघ्न और दरबारियों के साथ भरत चित्रकूट पहुंचे और राम से मिले। दो भाईयों के इस मिलन को भारत में भरत-मिलाप के नाम से जाना जाता है। यह पेंटिंग चित्रकूट में दो भाईयों, भरत और राम के बीच मुलाकात के दृश्य को दर्शाती है। यह अद्वितीय है क्योंकि इसमें एक ही पेंटिंग में दो बेहद भावनात्मक दृश्य दर्शाये गए है। पहला, अत्यधिक खुशी की भावनाएं, जब राम अपने भाईयों, माताओं और परिवार के अन्य सदस्यों से मिलते हैं और दूसरा अत्यधिक दुख, जब उन्हें पिता की मृत्यु के बारे में पता चलता है।

उनियारा शैली:-

“जय हनुमान ज्ञान गुन सागर
जय कपिस तिहु लोक उजागर
रामदुत अतुलित बलधामा,
अजंनि पुत्र पवन सुत नामा”



चित्र संख्या 05:- भगवान हनुमान उनियारा, 18वीं (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

हे हनुमान, आपकी जय हो, आप ज्ञान और पुण्य के सागर है। हे वानरों के राजा, आपकी जय हो, आप तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। हे राम के दूत आप अद्वितीय शक्ति के धाम हैं, अंजनीपुत्र और पवनदेव के पुत्र पवनसुत आपके नाम हैं। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 5

अपार ज्ञान असीमित गुण, अतुलनीय पराक्रम वायु की गति और पृथ्वी की दृढ़ता से युक्त हनुमान भारत में सर्वाधिक पूजे जाने वाले देवता हैं। उन्हें महावीर, महाबली, बजरंगबली, संकटमोचन, पवनपुत्र, मारुतिनंदन, रामदूत और कपिश के नाम से भी जाना जाता है। उन्हें सागर के समान अथाह और व्यापक ज्ञान रखने के लिए जाना जाता है, फिर भी वे किसी दार्शनिक या बौद्धिक प्रवचन को प्रेरित नहीं करते हैं। वे आस्था जगाते हैं, लेकिन अजीब बात है कि उनमें कोई रहस्यवाद, कोई आध्यात्मिकता, कोई हठधर्मिता और कोई तत्वमीमांसा नहीं है। हनुमान अपने आप में एक देवता हैं। उन्हें भगवान शिव का अवतार माना जाता है।

इस चित्र में हनुमान जी को कमल के फूलों से भरे एक छोटे-से तालाब के पास एक सफेद चबूतरे पर बैठे हुए दिखाया गया है। वह राम नाम जपने में लीन हैं और साथ ही अपने दाहिने हाथ में भी हाथ में वह अभय प्रदान कर रहे हैं। भय से सुरक्षा, यह एक अनोखी पेंटिंग है और उनका यह रूप छवि को मूर्तियों और लघुचित्रों में शायद ही कभी दर्शाया जाता है। उनियारा के कलाकार ने सफलतापूर्वक केले के बगीचे में बैठे हनुमान की भक्ति भावना और रामधुन गाते हुए चित्रण किया गया है।

जोधपुर शैली:-

रामायण के कुछ संस्करणों के अनुसार जब भगवान राम लंका जाते समय समुद्र तट पर थे। जिसे अब रामेश्वरम् के नाम से जाना जाता है और समुद्र पार करने के बारे में सोच रहे थे, तो उन्हें प्यास लगी और उन्होंने वानरों से पानी लाने को कहा। हालांकि जब पानी का घड़ा उनके हाथ में था तो उनके मन में आया कि उन्हें पानी पीने से पहले भगवान शिव से प्रार्थना करनी चाहिए। इसके अलावा, उनके कानों में एक दिव्य घोषणा गूंज रही थी। "तुम मेरी पूजा किये बिना पानी पी रहे हो। राम ने तुरंत रेत का शिव-लिंग बनाया और उसकी पूजा की। उन्होंने रावण के खिलाफ युद्ध में सफलता के लिए शिव से आशीर्वाद मांगा। जब उन्होंने प्रार्थना की, तो शिव देवी पार्वती, हाथी के सिरवाले गणेश और छः सिर वाले कार्तिकेय के साथ उनके सामने प्रकट हुए। राम की पूजा से प्रसन्न होकर एक अन्य जो दक्षिण भारत में भी लोकप्रिय है, बताती है कि लंका पर आक्रमण करने से पहले, राम ने शिव की पूजा करना और उनकी अनुमति लेना आवश्यक समझा, क्योंकि रावण शिव का परम भक्त था। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 6

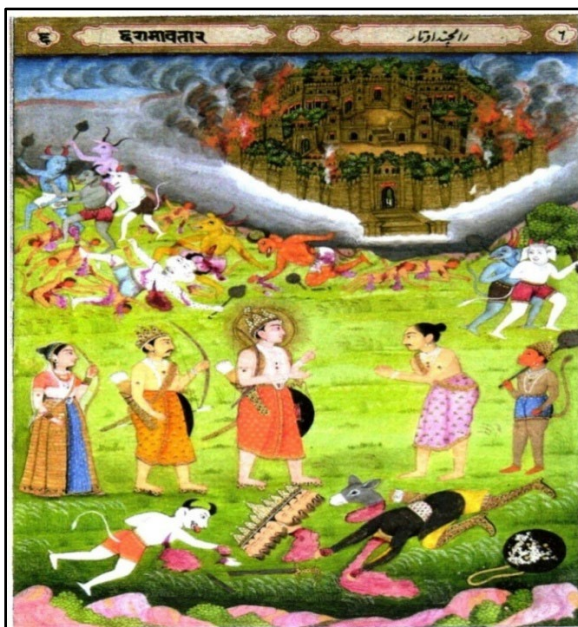


चित्र सं0 06:- भगवान शिव, देवी पार्वती और उनके दो पुत्र भगवान राम को रावण के विरुद्ध उनकी विजय पर आशीर्वाद देने आए हैं। जोधपुर शैली, वनस्पति रंग, (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

जोधपुर से रामायण के इस लोक-शैली वाले पन्ने में राम-लक्ष्मण और विभीषण को गुलाबी चट्टान पर बैठे हुए दिखाया गया है। राम को बहुत खुशी होती है। जब वे शिव को उनके परिवार के साथ देवी पार्वती, गणेश और कार्तिकेय के साथ वहां आते हुए देखते हैं। अग्रभूमि में भगवान हनुमान, नल, नील और अन्य बंदर बैठे हैं। वे भी अपने सामने पवित्र परिवार को देखकर आश्चर्यचकित हैं।

अलवर:-

यह बेहतरीन पेंटिंग जिसमें प्रमुख रूप से एक्शन से भरपूर आकृतियां हैं, भगवान राम और रावण के बीच अंतिम युद्ध को दर्शाती है। जब अच्छाई और बुराई की ताकतें आखिरकार आमने-सामने थीं और रावण की मृत्यु हो गई। गहरे लाल रंग की धोती और सुनहरे पादुका पहने हुए राम, जो उनके सुन्दर गुलाबी शरीर के साथ विपरीत है, राम को रावण के छोटे भाई विभीषण के साथ बातचीत करते हुए दिखाया है। राम के बाण से घायल होने के बाद रावण की मृत्यु दिखायी गई है। उसके दस सिर और गधे का सिर गिर गया है और अंततः अच्छाई ने बुराई पर विजय प्राप्त कर ली है। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 7



चित्र सं0 07:- पंचवटी से रामायतार और रावण की मृत्यु " अलवर 18वीं शताब्दी (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली

रावण ने पंचवटी से अपहरण के बाद उन्हें वाटिका में रखा था। साधारण कपड़ों के बजाय, दोनों भाइयों ने सुनहरे मुकुट, मोती के आभूषण और सोने की पादुकाएं पहनी हुई हैं। भाइयों की आकृतियां कोमल और नाजुक ब्रश के साथ प्रस्तुत की गई हैं। यह चित्र एकशन से भरपूर है और इसमें चमकीले रंग इस्तेमाल किए गए हैं। सबसे ऊपर लिखा है " देवनागरी और उर्दू में रामावतार"

बूंदी शैली:-

इस शैली के चित्रों में राम और सीता जिस सुंदर वृक्ष के नीचे बैठे हैं उसे सप्तपर्णी कहते हैं। यह एक प्रजाती है जिसके प्रत्येक तने पर सात पत्तियों का समूह होता है। राम, जिनके सिर पर नींबू है, जिसको कमल के फूलों से सजा हुआ एक सुनहरा मुकुट पहने हुए दिखाया गया है। उन्होंने एक सफेद पोशाक पहनी हुई है और एक धनुष बाण लिया हुआ है और उनके हाथों में एक पान है। आभूषणों से सजी सीता ने लाल घाघरा, हरी चोली और पारदर्शी दुपट्टा पहना हुआ है। हरे रंग की धोती पहने हुए लक्ष्मण ने पंखे के आकार का अपना उत्तरीय पकड़ा हुआ है। आमतौर पर राम के परम भक्त भगवान हनुमान और राम के पैरों के पास बैठे हुए विभिन्न में दिखाया हुआ है। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं० 8



चित्र सं० 8:- भगवान राम और सीता जो कमल के फूलों पर बैठे हैं। 18वीं शताब्दी (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

2. निष्कर्ष

अतः यह सम्पूर्ण प्रपत्र के अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि राजस्थान की लघु चित्रकला (रामायण) में शैलीगत एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन में राजस्थान, मेवाड़ व वहां के कई क्षेत्रों में शैलीगत लघुचित्र बहुत ही सुन्दर व आकर्षक रंग योजना, हस्त निर्मित और आकार में छोटे हैं। इनके रंग खनिज रंग व वनस्पति रंग व कीमती पत्थर, नील शंख व शुद्ध सोने और चांदी में निर्मित किये जाते थे। अपभ्रंश शैली व मुगल शैली का प्रभाव अत्यधिक है। राजस्थान की विभिन्न शैलियां में बने रामायण, महाभारत, भागवत, गीत गोविन्द, सूर-सागर जो हिन्दु धार्मिक ग्रन्थों के विषयवस्तु पर चित्र संपूटों को चित्रित किया गया है। विशेष धार्मिक ग्रन्थ के विषय वस्तु पर बने चित्र में अपनी ही विशेष ख्याति हैं। इनकी पूरे विश्व में अपनी एक विशेष ख्याति है।

REFERENCES

- डॉ दलजीत, "राजस्थानी लघुचित्र" स्ट्रोक्स और रंगों का जादू"
 लिंगां यार्क लीच, "भारतीय लघु चित्रकला और रेखाचित्र"
 निधि भटनागर, "मेवाड़ चित्रकला के बदलते चरण"
 रोड़ा अहलूवालिया, "राजपूत पेंटिंग "रोमांटिक, दिव्य और दरबारी कला रूप भारतीय"
 डॉ० वेणु वासुदेवन और विनय माथुर (2013) "राम-कथा" राम की कहानी"
 जुट्टा जैन न्यूबॉयर, "रामायण में पहाड़ी मिनेएचर पेंटिंग"
 जे. पी. लास्टी, "रामायण, "मेवाड़ पांडुलिपियाँ"
 डॉ० शैलेन्द्र कुमार (2009) "उत्तर भारतीय पोथी चित्रकला"
 मोती चन्द, "17वीं शताब्दी में मेवाड़ चित्रकला"
 एम. डी. खरे, "मालवा चित्रकला की भव्यता"
 प्रताप पादित्य पाल, "राजपूत चित्रकला में शास्त्रीय परम्परा"
 निरंजन गोस्वामी, "आसुतोष संग्रहालय रामचरितमानात की पेंटिंग्स की सूची"

पोर्ट लैंड, ओरेगन, एडविन बिनी के संग्रह से “राजपूत लघुचित्र,” 3
एस. एल. नागोरी, “प्राचीन भारत का वृहत इतिहास”
स्टीवन कोसाक, “भारतीय दरबारी चित्रकला” 16वीं-19वीं शताब्दी”
आनन्द कुमार स्वामी (1975), “राजपूत पेंटिंग” - एक में दो खंड’